Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 4 | ISSN : 2582-0095

चंद्रगुप्त नाटक मे राष्ट्रीय चेतना एवम् प्रासंगिकता

सतीश कुमार
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, ए0पी0एस0 विश्वविद्यालय रीवा, म0प्र0

Article Info
Volume 6, Issue 4
Page Number : 46-49
Publication Issue :
July-August-2023
Article History
Accepted : 01 July 2023
Published : 15 July 2023

शोधसारांश – इतिहास के पन्नों पर महात्मा गाँधी ने स्वाधीन भारत के युद्ध शक्ति के महत्व को अस्वीकार नही है जिस प्रकार। उसी जरह जैसे–जैसे दिन चढ़ता जा रहा है दरख्तों के साये में धूप तेज होती जा रही है यह धूप जैसे–जैसे बढ़ती जायेगी उसी रफ्तार से चन्द्रगुप्त नाटक की प्रासंगिकता बढ़ती जाएगी। यह स्वतः आज प्रमाणिक होता दिखायी दे रहा है।

मुख्यशब्द– चन्द्रगुप्त, नाटक, राष्ट्रीय, चेतना, देश, इतिहास।

प्रसाद ने चंद्रगुप्त नाटक मे अपने समय और देश को प्रत्यक्षतः चित्रित नही किया अपितु उसे इतिहास के दर्पण मे प्रतिबिम्बित किया है। विक्टर ह्यगो ने लिखा कि नाटक जीवन का सपाट शीशा नही है जो वास्तविकता का यथातथ्य बिम्ब प्रस्तुत करता है बल्कि संकेन्द्रित करने वाला ऐसा शीशा है जो रंजित किरणों को सघन बनाता है और चमक को रोशनी मे रोशनी को लौ मे बदल देता है। प्रसाद मे यही किया है उन्होने वर्तमान को अतीत के शीशे मे रंजित और सघन कर प्रस्तुत किया है।

गौरतलब है कि चन्द्रगुप्त नाटक मे व्यक्त राष्ट्रीय चेतना को उसके रचना–काल के संदर्भ मे ही सही रूप मे समझा जा सकता है चन्द्रगुप्त से संबंध प्रसाद का पहला नाटक 'कल्याणी–परिणय' सन् 1912 मे 'नागरी प्रचारिणी' पत्रिका मे प्रकाशित हुआ था जिससे जुड़ कर बाद मे चन्द्रगुप्त नाटक की रचना हुई । इसका प्रकाशन सन् 1931 ई0 मे हुआ पर प्रकाशकीय टिप्पणी के अनुसार इसका आलेख दो वर्ष पहले ही प्रेस मे चला गया था। अनुमान किया जा सकता है कि आलेख को अंतिमरूप सन् 1929 के कुछ पहले मिला होगा। प्रसाद इस अवधि मे राष्ट्रीय स्थिति के प्रति अधिक सजग थे।

इसका संकेत स्कंदगुप्त के प्रकाशन सन् 1928 से मिलता है। आधुनिक काल के भारतीय इतिहास के इन दशको मे स्वाधीनता संग्राम कई रूपों मे दिखाई देता है। यह संग्राम मुख्यतः कांग्रेस के तत्वाधान मे चलता रहा । 1908 से 1916 तक कॉंग्रेस उदारवादी नेताओं के हाथ मे रही। गोखले की मृत्यु (19फरवरी 1915) के बाद चिंतन के विभिन्न स्तरों के लोग इसमे आये। सन् 1927 मे कॉंग्रेस के मद्रास आंदोलन मे यह प्रस्ताव पास हुआ कि कॉंग्रेस का अंतिम लक्ष्य पूर्ण स्वराज को प्राप्त करना है पूरा देश अशांति विक्षुब्धता की स्थिति से गुजर रहा था देश को स्वाधीन करने का संकल्प हिंसात्मक–अहिंसात्मक सक्रियता पारस्परिक विद्वेष और संघर्ष आशा– निराशा का द्वंद। ऐसे संदर्भ मे यदि जयशंकर प्रसाद ने अपने दो प्रमुख नाटकों स्कंदगुप्त और चंद्रगुप्त को नायक बनाया तो इसे सहज स्वाभाविक समझा जाना चाहिए। भारतीय इतिहास

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

के इन दोनो नायकों ने अपने अपने समय मे विदेशी आक्रमणकारियों का सामना किया था और उन्हे पराजित किया था।

इतिहास, वस्तुविन्यास, चरित्र आदि सब कुछ रखकर देखें तो चन्द्रगुप्त की सबसे बड़ी शक्ति है इसमे राष्ट्रीय चेतना। इसी ने इस नाटक को इतना महत्वपूर्ण बनाया था और प्रासंगिक भी प्रसाद के समय के लिए ही नही आज के लिए भी राष्ट्रीयता की पहली शर्त है कि हम समझें–समझे ही नही हमे लगे कि यह हमारा देश है हम इस देश के है हम इसे सहज रूप से प्यार करते है। प्रसिद्ध गीतकार स्व0 वीरेन्द्र मिश्र के शब्दों मे–

''मेरा देश है यह
इससे प्यार मुझको
मेरी खुशहाली पर कोई
खूनी हाथ उठायें ना।''

यही चेतना चन्द्रगुप्त की वाणी मे व्यक्त हुई है– मेरे देश है मेरे पहाड़, मेरी नदियाँ है और मेरे जंगल है। इस भूमि के एक–एक परमाणु मेरे है और मेरे शरीर के एक एक क्षुद्र अंश उन्ही परमाणुओं के बने है। फिर मै कहाँ जाऊँगी यवन? इतना अपनापन इतना लगाव हो जिसे अपने देश से वह उसके कल्याण के लिए अपना सर्वस्व जीवन तक न्यौछावर कर सकता है (अलका आर्यावर्त के सभी बच्चे आभ्भीक जैसे नही होगे। वे इनकी मान प्रतिष्ठा और रक्षा के लिए तिल–तिल कट जाएगे) जैसा कि कुछ दशक पूर्व के अपने स्वाधीनता– संग्राम मे अगणित बलिदानी वीरो ने किया था। आज के संदर्भ मे बात करे तो कितने लोग है जो इस देश को अपना समझते है चन्द्रगुप्त की भाँति।

राष्ट्रीय चेतना की बात हो या अपने देश की प्रकृति उसकी सुंदरता कला संस्कृति आदि से प्रेम। इस दृष्टि मे कार्नेलिया द्वारा गाये गये गीत अरूण यह मधुमय देश हमारा की ओर से उसके द्वरा की गयी भारत प्रशस्ति की चर्चा बार–बार होती रही है। इस गीत को राष्ट्र–प्रेम का गीत माना जाता है पर इसके संदर्भ मे प्रभाकर श्रोत्रिय ने एक तर्क संगत प्रश्न उठाया है कि– निश्चय ही वह मार्मिक गीत है परन्तु यह एक ऐसे देश के सेनापति की बेटी द्वारा गाया गया जो भारत से परास्त हो चुका है मान लीजिए कि भारत यूनान की प्रशंसा के गीत गाती वहाँ के राजा से प्रेम करती तो आप उसे देशभक्त करते या देशद्रोही? देशभक्ति का नियम एक देश की कन्या पर लागू होता है, वहीं दूसरे देश की कन्या पर लागू नही होना चाहिए। फिर भी इस विसंगति पर आज तक किसी का ध्यान क्यों नहीं आया? गौरतलब है कि कार्नेलिया के मन पर इन तीन बातों का प्रभाव है–

1 भारत विजेता है पर उसमें विजेता का अभिमान नही है, उसमे पराजित देश के प्रति भी सहृदयता–उदारता है।
2 शत्रु देश (यानी भारत) ने आक्रामक देश की कन्या की रक्षा उसी के देश के बलात्कारी से की थी।
3 भारतीय चिन्तन और उदारता ने उसे अभिभूत कर लिया था।

इन तमाम अनुभवों से गुजर कर उसके मन मे भारत के प्रति विदेशी भाव निकलकर स्वदेशी भाव जम जाता है जो कि तार्किक भी है।

प्रसाद ने चाणक्य के माध्यम से जिस एक शब्द की कल्पना की थी वह नाटक के अंत मे पूरी भी होती है तुम जानते हो कि चन्द्रगुप्त ने दक्षिणापथ के स्वर्णगिरि से पंचनद तक सौराष्ट्र से बंग तक एक

महान साम्राज्य स्थापित किया था। यह साम्राज्य मगध का नही है यह आर्य साम्राज्य है। पराधीन देश के राष्ट्रचिंतक प्रसाद ने जो सपना देखा था वह स्वाधीनता प्राप्रपित के बाद पूरा हुआ पर उसके बाद?

विभिन्न क्षेत्रों से अलग पहचान और अलग सत्ता की आवाजे आने लगी है स्तान खण्ड आदि की माँग संघर्ष मे बदलने लगी। कई राज्य समझने लगे कि उनकी धरती से गुजरने वाली जलधारा सिर्फ उनकी है राष्ट्र की नही उनकी जमीन से निकली हुई सम्पदा सिर्फ उनकी है राष्ट्र की परिकल्पना का जो आग्रह किया गया है क्या उसे आज अप्रासंगिक कह पायेंगे आज?

स्पष्ट शब्दो मे कहें तो नही चन्द्रगुप्त नाटक मूलतः स्वतंत्र–रक्षा और अत्याचार–विनाश का नाटक है। स्वतंत्रता ही किसी राष्ट्र की सुख समृद्धि एवम् सम्मान पूर्ण जीवन का आधार है।

प्रसिद्ध चितंक रूसों ने कहा था–कोई देश स्वाधीनता के बिना सुचारूरूपेण जीवित नही रह सकता।

गोस्वमी तुलसीदास जी लिखते है–पराधीन सपनेहु सुख नाही।

चन्द्रगुप्त मे अलका कहती है– पराधीनता से बढ़कर विडम्बना और क्या है?

किसी भी युग मे किसी भी देश का यह प्रथम कर्तव्य है कि वह अपनी स्वाधीनता की रक्षा करें। यदि वह परतंत्रा से मुक्ति प्राप्त करें। इस नाटक मे प्रसाद जी ने चन्द्रगुप्त के शब्दों मे इस संकल्प को किया है– हमे आक्रमणकारी यवनों को यहाँ से हटाना है और उन्हे जिस प्रकार हो भारतीय सीमा से बाहर करना है।

कहने की आवश्यकता नही कि प्रसाद के नाटक मे यवनो का अर्थ अंग्रेजों सक है चंन्द्रगुप्त के संकल्प मे। जिस प्रकार हो शब्द अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्रसाद के समय मे स्वाधीनता की लड़ाई यदि एक ओर महात्मा गाँधी के नेतृत्व मे अहिंसात्मक शक्ति से लड़ी जा रही थी तो दूसरी ओर क्रान्तिकारियों के हिंसात्मक प्रत्यन भी सक्रिय थे। चन्द्रगुप्त नाटक की रचना के कुछ पहले से ही अनुभव किया जा रहा था कि गाँधीवादी पद्धति सफल नही हो रही थी। क्रांन्तिकारियों ने हिंसात्मक के प्रत्यन भी सक्रिय थे। क्रान्तिकारियों ने गाँधी को स्पष्ट लिखा कि– अहिंसक असहयोग आंदोलन अब समाप्त हो गया है आप प्रयोग के लिये एक वर्ष चाहते थे। अब उसके लिए चार वर्ष पूरे हो गये। (यंग इंडिया 12 फरवरी 1925)।

एक संदर्भ में चन्द्रगुप्त मे अस्त्र–शक्ति पर बल दिया गया है इसे अस्वाभाविक नही कहा जायेगा। मालवों को अर्थशास्त्र की उतनी आवश्यकता नही जितनी अस्त्र शास्त्र की।

एक जीवन की हत्या से डरने वाले तपस्वी बौद्ध सिर पर मँडरानेवाली विपत्तियों से रक्त समुद्र की आँधियों से आर्यावर्त की रक्षा करने मे असमर्थ अप्रमाणित होंगे, महात्मा गाँधी का विचार था कि– शुभ साध्य का साधन भी शुभ चाहिए पर प्रसाद ने इस नाटक मे ऐसे चाणक्य को महानायक बनाया है जो केवल सिद्धि की शुभता को देखता है किंतु साधन कैसा भी प्रसाद को अधिकतर विद्वानों ने गाँधीवादी आदर्शों का विश्वासी ही माना है और वे हैं भी। जिसकी झलक कामायनी और अन्य कृतियों मे मिलती है।

अतः इससे स्मरण रखना चाहिए कि ईश्वर ने सब मनुष्यों को स्वतंत्र उत्पन्न किया है परन्तु व्यक्तिगत स्वतंत्रता वही तक दी जा सकती है जहाँ दूसरों की स्वतंत्रता मे बाधा न पड़े। यही राष्ट्रीय नियमों का मूल है।

राष्ट्रीयता युद्ध शासन आदि से हट कर देखें तो प्रसाद ने चन्द्रगुप्त के उन उदान्त मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा की है जो प्राचीन काल से हमारे आदर्श रहे हैं जैसे–

1 चाणक्य का त्याग सहज ही ध्यान आकृष्ट करता है चाणक्य का पुरा जीवन देश को समर्पित रहा उसके लिए संघर्ष किया साम्राज्य की स्थापना की और उस साम्राज्य को राष्ट्रहित मे दे दिया चन्द्रगुप्त को।

2 वही आमत्य का पद त्यागना राक्षस के लिए
3 मालविका और कल्याणी का एकनिष्ठ प्रेम।
4 सिकंदर और सिल्यूकस को क्षमा करना इत्यादि।

अतः हम कह सकते हैं कि इतिहास के पन्नों पर महात्मा गाँधी ने स्वाधीन भारत के युद्ध शक्ति के महत्व को अस्वीकार नही है जिस प्रकार। उसी जरह जैसे–जैसे दिन चढ़ता जा रहा है दरख्तों के साये में धूप तेज होती जा रही है यह धूप जैसे–जैसे बढ़ती जायेगी उसी रफ्तार से चन्द्रगुप्त नाटक की प्रासंगिकता बढ़ती जाएगी। यह स्वतः आज प्रमाणिक होता दिखायी दे रहा है।

संदर्भ सूची–

1 चन्द्रगुप्त संवेदना और शिल्प– सिद्धानाथ कुमार
2 प्रसाद के ऐतिहासिक नाटक– डॉ जगदीशचन्द्र जोशी
3 प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन– डॉ जगन्नाथ प्रसाद शर्मा
4 प्रसाद व्यक्तित्व और कृतित्व (आकाशवाणी, बम्बई से प्रसारित वार्ता 1 मार्च 1982)
5 प्रसाद और उनके नाटक– प्रो0 केसरी कुमार